OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 6

गुवाहाटी-रूप नगर। 'गीता के भगवान द्वारा स्वर्णिम युग की स्थापना का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री श्री भृगु गुरु महाराज,आचार्य पंचकन्या धाम,बसिस्ठा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा,दिल्ली, ब्र.कु. उषा,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शीला तथा अन्य।

अहमदनगर। राजयोगिनी ब्र.कु. उषा के 'गीता ज्ञान प्रवचनमाला' कार्यक्रम के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का उद्घाटन करते हुए समाजसेवी अन्ना हज़ारे। साथ हैं ब्र.कु. राजेश्वरी, ब्र.कु. दीपक हरके, ब्र.कु. रामचन्द्र हीरे, डॉ. बापू साहेब कांडेकर तथा अन्य।

बार्शी। लायन्स क्लब द्वारा सेवाकेन्द्र पर ब्र.कु. संगीता व ब्र.कु. अनीता का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में लायन्स क्लब अध्यक्षा शिल्पा कुलकर्णी, लायन्स क्लब पूर्व अध्यक्षा वर्षा खांडवीकर, सदस्या डॉ. प्रज्ञा हाजगुडे, वैभवी बुडूख तथा सीमा काले।

नवी मुम्बई-वाशी। आर.एस.एस. द्वारा आयोजित 'सद्भावना बैठक' में उपस्थित हैं ब्र.कु. शीला, डॉ. नागेन्द्र कुमार उपाध्याय, तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि।

हरिद्वार। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं महन्त उमेश्वर महाराज,हरिद्वार।

दिल्ली-नरेला मण्डी। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' कार्यक्रम में आये विधायक गुगन सिंह का स्वागत करते हुए ब्र.कु. दुर्गा। साथ हैं विधायक नीलदमन जी तथा समाजसेवी राजेन्द्र सिंगल जी।

सदा शक्तियों को आगे रखने में ही सफलता

आज भी आपका त्यागी और योगी जीवन अनेक आत्माओं को प्रेरणा दे रहा है। आपका रूहानियत सम्पन्न चेहरा अनेक चेहरो में रूहानियत का बीज अंकुरित कर देता था। आपके मुख की दिव्य मुस्कान, दूसरों के दुखों का अन्त कर देती थी। आप लगभग 39 वर्षों तक प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की मुख्य प्रशासिका थीं। जैसे परमपिता से रूहों का असीम प्यार है, वैसे ही दादी जी ने सभी आत्माओं के दिल को जीत कर इस संगठन को एकता के सूत्र में बांधा। ईश्वरीय परिवार आपकी सेवाओं से गौरवान्वित है। यहाँ, ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण स्थिति प्राप्त कर अव्यक्त होने के समय के दादी जी के अनुभव, उनके ही योग-युक्त भावों में प्रस्तुत है.....। मैं कई वर्षों से बम्बई सेवा पर उपस्थित थी। वहाँ भेजकर बाबा ने मुझे कहा था, कि बच्ची, जैसे बाबा सभी को संतुष्ट करता है, वैसे ही तुम भी सभी को सन्तुष्ट करो। और जैसे कि बाबा ने मुझे वरदान दे दिया था।

मुझे यह सदा उमंग रहता था कि मैं बाबा की सभी प्रेरणाओं को पूरा करूँ। और यह मेरा अनेक बार का अनुभव है कि बाबा का पत्र आने से पूर्व ही मैं बाबा की प्रेरणाओं को जान लेती थी। जिन महान सेवाओं के लिए बाबा ने मुझे भेजा था, मैं पूर्णतया निभाती थी, सभी के प्रति सुख-स्वरूप होकर रहने की कामना रखती थी। इस प्रकार मैं दिसम्बर 1968 में बम्बई से पार्टी लेकर मधुबन आई थी। उसी समय दीदी सेवा-केन्द्रों पर चक्कर लगाने दिल्ली की ओर जाने वाली थीं, इसलिए मैं वहीं मधुबन में बाबा के पास रह गई। और ये कुछ ही दिन बाबा के साथ रहना, कि बाबा ने मुझे सब कुछ सिखा दिया।

मैंने देखा कि बाबा जब किसी भी बच्चे से मिलता है तो थोड़े ही शब्दों में उसकी समस्याओं को हल करके, उसे हल्का कर देता है। मैं देखती थी, बाबा यज्ञ के कार्य करते सदा उपराम नज़र आते थे। ऐसा लगता था कि निराकार शिवबाबा सदा ही उनके तन में विराजमान है। परन्तु वास्तव में वह साकार बाबा ही निराकार हो चुके थे, सम्पूर्ण फ़रिश्ता बन चुके थे।

बाबा ने मुझे एक हफ्ते में ही सब कुछ सिखा दिया। पार्टियों को बाबा की भासना कैसे देनी है। यज्ञ को पूर्णतया कैसे सम्भालना है। हर बच्चे की स्थिति पर कैसे ध्यान रखना है, सब यज्ञ वत्सों को कैसे सन्तुष्ट करना है। आदि....आदि...। एक दिन बाबा ने मुझसे कहा, ''कुमारका, अगर बाबा एक तरफ बैठ जाए तो तुम यज्ञ को सम्भाल सकती हो?'' मैंने बड़े ही फ़क्र से उत्तर दिया – '' हाँ बाबा, क्यों नही।'' मुझे क्या पता था कि बाबा के ये बोल सम्पूर्ण सत्य होंगे और हमारा प्यारा बाबा सचमुच ही देह से न्यारा होकर वतन में बैठने जा रहा है। तब बाबा को अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ता बनने का स्पष्ट अनुभव था।

बाबा आपको क्या वरदानी बोल बोलते थे और बाबा के साथ रहते आपने क्या क्या सीखा ?

बाबा कहा करते थे– '' ये बच्ची माला में नम्बर वन है। ये वफादार बच्ची है।

तभी बाबा कहते थे कि ये बाबा की सम्पूर्ण पवित्र कन्या है। ये सच्ची आज्ञाकारी बच्ची है। बाबा कहते रहते थे कि कुमारका बड़ी नदी है। ये महारथी बच्ची है, इस प्रकार मुझे यह महसूस होता था कि जैसा मेरे मन में बाबा के प्रति अथाह प्यार व आदर है, बाबा भी मुझे सच्चे प्यार व सम्मान की दृष्टि से निहारता है। बाबा के साथ रहते हुए मैंने बाबा के जीवन से अत्यधिक उदारता और राजाओं जैसी शालीनता सीखी। मैंने बाबा से कार्य व्यवहार में रहते हुए उपराम रहने की कला सीखी, वरदानों से इतना सजाया जो आज भी बाबा के वे चरित्र नयनों से ओझल नहीं होते।

जब बाबा अव्यक्त हुए, उस दिन बाबा की दिनचर्या कैसी रही?

उस 18 जनवरी के स्मृति पटल पर अमिट रूप से अंकित दिवस पर सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में और बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही समय था जबकि बाबा ने प्रात: की मुरली नहीं चलाई थी, परन्तु उस दिन सर्वोच्च स्थिति में, ईश्वरीय खुशी में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने को कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था– ''बच्ची डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।'' उसी दिन बाबा ने कहा– ''आओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ।''और फिर बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, ''बच्चे सदा एक मत होकर, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है। तब ही सेवा में सफलता होगी।'' ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिए थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे।

फिर शाम को जल्दी ही क्लास प्रारम्भ हुई।

मैंने कहा '' बाबा, सभी इन्तज़ार कर रहे होंगे, आज जल्दी ही आप क्लास में चलें। उस दिन बाबा 8.00 बजे ही क्लास में आये और साकार रूप में वे अन्तिम महावाक्य तो सम्पूर्ण गीता ज्ञान का सार है... दिल में समाने तुल्य है... बाबा ने कहा था— ''बच्चे, सिमिर सिमिर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।'' ''बच्चे, निन्दा जो हमारी करे, मित्र हमारा सोई'' तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी चाहिये और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।'' इस प्रकार याद की यात्रा पर बल देते हुये यज्ञ पिता, बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये.... बोले – '' बच्चे निर्विकारी, निराकारी और निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।''

और फिर उस अन्तिम घड़ी की पूर्व परछाई फेंकते हुए बाबा के मुख से ये शब्द निकले – ''अच्छा बच्चे विदाई।'' ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा, सदा बच्चों को गुड नाइट ही कहा करते थे।

जब बाबा ने देह त्याग कर सूक्ष्म वतन को अपना सिंहासन बनाया, वह अनुभव सुनाइये।

मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम 4 बहनें भी बाबा के साथ गईं, तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शान्ति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अन्तिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चले और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ व उत्तरदायित्व दे - **शेष पेज 8 पर...**